सं. श्रो.वि./जी.जी.एन./29-84/14266.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० कावली जी होस्पीटलं एवं ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र, धामडोज, गुड़गांवा, के श्रीमक श्री बीर पाल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्टिस्चना सं० 5415→3→अ म−68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिष्टिस्चना सं० 11495—जी—अम—57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिष्ठित्यम की धारा 7 के श्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायलय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रिमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बीर पाल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एफ.डी./49-84/14273. \rightarrow चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मै. ग्राईशर गुडधँ लि., ज्लाट नं० 59, सैक्टर 24, फ़रीदाबाद, के श्रमिक श्री लिलता प्रशाद शर्मा तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है ;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन ग्रौद्योगिक ग्रिधि-करण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे निर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्याय-निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री लिलता प्रशाद शर्मा की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० ग्रो.वि./जी.जी.एन./144-83/14281.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) नियंतक हरियाणा राज्य परिवहन, चण्डीगढ़, (2) जनरल मैनेजर, हरियाणा रोडवेज, गुड़गांबा के श्रमिक श्री रनबीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रनबीर सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यो तहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 9 अप्रैल, 1984

सं. ग्रो.वि./ यमुना/ 287-83/14466.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मै० कार्यकारी ग्रभियन्ता, एच. सी. 11, डब्लयू वाई. सी. एच. ई. प्रोजैक्ट, झ्ण्डकलां, के श्रमिक श्रो जगमाल सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इमके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रब, ग्रीचोगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के उण्ड (घ) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रधिनियम की धारा 7 के ग्रधीन ग्रीदोगिक भ्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों क मंध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री जगमाल सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./एफ-डी/52-84/14483.--चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. प्रीसीजन ग्राटो इण्डस्ट्रीज, व्लाट नं. 376, सैक्टर 24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री सीदागर तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के संवन्ध में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्याय निर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, प्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन श्रौद्योगिक श्रिविकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिदिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्याय निर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री सौदागर की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. ग्रो.वि./एफ-डी/47-84/14490.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मै. वीनस पेपर मिल्ज, एन. ग्राई. टी., फरीवाबाद, के श्रमिक श्री एा. के. गोथल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोशोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं,

इसिलये, अब, भौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन भौद्योगिक अधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्वन्धित मामले श्रमिक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री एस. के. गोयल की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

दिनांक 12 ग्रप्रैल, 1984

सं. म्रो.वि./हिसार/110-83/14676.--चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कोपरेटिव-क्स-प्रोसैसिंग सोसाइटी लि., कालावली, जिला सिरसा, के श्रमिक श्री गुरमेल सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है:

ग्रीर वूंकि हरियाणा के राज्यशाल दिवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है ;

इसलिए, ग्रब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्राधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा भदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियामा के राज्यमाल इसके द्वारा सरकारी ग्राधिमुचना सं 9641-I-श्रम-70/32673, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी ग्राधिमुचना सं 3864-ए-एस.ग्रो.-(ई.)-श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्राधिनियम की घारा 7 के ग्राधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त पा उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिन्णिय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री गुरमेल सिंह की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

विनांक 23 अप्रैल, 1984

सं. म्रो.वि./एफ.डी./2/15-84/15697.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं॰ राजेण रवड़ उद्योग, मार्फत धाल स्टील नं. 2, एन०म्राई०टी॰, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री दया शंकर तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामजे के सम्बन्ध में कोई भौद्योगिक विवाद है; भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, श्रीद्यागिक विवाद ग्रिविनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिविनियम की घारा 7(क) के ग्रिवीन ग्रीद्योगिक ग्रिविकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं:---

क्या श्री दया शंकर की सेवार्श्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि./रोहतक/35-84/15704.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० मोनिका एक्सट्सन्स प्रा. लि., देव कालीनी, रोहतक, के श्रमिक श्री तेज सिंह सिन्धु तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रवितियम, 1947, की बारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई श्रक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिवसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्बर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रविसूचना सं. 3864-ए.एस.श्रो (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रविनियम की धारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री तेज सिंह सिन्धु की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भो. वि./रोहतक/33-84/15711.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै. मोनिका एक्सट्शन प्रा० लि०, देव कालौनी, रोहतक, के श्रमिक श्रीमित चमेली देवी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीदोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रीद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनोक 6 नवम्बर. 1970 के साथ पठित सरकारी ग्रीधसूचना सं. 3864-ए.एस.ग्रो. (ई)श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त ग्रीधिनयम की घारा 7 के ग्रीधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा। मामला न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से मुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्रीमति चमेली देवी की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?

सं .श्रो.वि./एफ.डी./160-83/15718.—-चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं∘ सुपर स्टील, प्लाट नं. 34, सैक्टर 6, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री मोहमद सईद खान तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध के में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, ग्रव, ग्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7(क) के ग्रधीन ग्रौद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या श्री मोहमद सईद खान की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?